३. गाना–बजाना

– रामवृक्ष बेनीपुरी

परिचय

जन्म : १८९९, मुजफ्फरपुर (बिहार)
मृत्यु : १९६८ (बिहार)
परिचय : रामवृक्ष बेनीपुरी जी बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी और यशस्वी रचनाकार हैं । निबंधकार के रूप में आप प्रसिद्ध हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'अमर ज्योति', 'तथागत' (नाटक), 'माटी', 'गेहूँ और गुलाब' (निबंध), 'पतितों के देश में', 'कैदी की पत्नी' (उपन्यास), 'चिता के फूल', 'जीवन तरु', (कहानी संग्रह), 'पैरों में पंख बाँधकर' (यात्रा साहित्य), 'माटी की मूरतें', 'लाल तारा' (शब्दचित्र संग्रह), 'नया आदमी' (कविता संग्रह) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत निबंध में लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने विविध देशों के वाद्‌यों एवं उनके बजाने के ढंग का वर्णन किया है । आपका मानना है कि गाने–बजाने का शौक सभी देशों के निवासियों में होता है ।

मौलिक सृजन

यू ट्यूब अथवा पुस्तक के आधार पर वाद्‌यों का संक्षेप में वर्णन लिखो ।

पी–पी–पू–पू !

कोई बच्चा बेतहाशा रो रहा है । चुप कराने की कितनी भी कोशिश आप कर रहे हैं, वह चुप नहीं होता । बस आप एक पिपुही लेकर उसके नजदीक बजा दीजिए, वह चुप । शायद मुसकरा भी पड़े और उसे लेने के लिए जिद तो करेगा ही ।

बाजे में यह करामात है ही । लोगों का तो कहना है कि जिस समय मनुष्य जाति अपने बचपन में रही होगी, विद्‌या–बुद्‌धि का आज जैसा विकास नहीं हुआ होगा; उस समय भी उसमें गाने–बजाने का शौक जरूर हुआ होगा । गाने के जरिये हम अपने दिल के उच्छ्‌वास को प्रकट करते हैं, बाजा उस गाने को भड़कदार और दिलचस्प बना देता है । आज संसार के पिछड़े–से–पिछड़े देश में जाइए, आप वहाँ गाना–बजाना जरूर पाएँगे !

पहले कौन–सा बाजा बना होगा, इसका अंदाज लगाने वाले कहते हैं कि पहले कई चीजों को इकट्‌ठा कर, उन्हें पीट–पीटकर शब्द निकालने की चेष्टा की गई होगी । मरे हुए पशुओं के चमड़े को पोपले कद्‌दू पर मढ़कर ढोल और नरकट की गाँठों को छेदकर उससे पिपुही बना ली गई होगी । किसी पोपली चीज में छोटे–छोटे कंकड़ रखकर उसे हिलाने–डुलाने पर एक प्रकार का स्वर निकलते देखकर झुनझुना बनाने की कल्पना की गई होगी । आज भी बहुत से देशों में तीन बाजे हैं– ढोल, पिपुही और झुनझुना; चाहे उनका आकार–प्रकार अलग हो । इन तीनों के सहारे ही नाना तरह के स्वर निकाले जाते हैं ।

वनवासी लोगों के गाने–बजाने को गौर से सुनने पर मालूम होता है कि उनमें 'ताल' पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, 'सुर' पर कम । अमेरिका के रेड इंडियनों को देखिए या अफ्रीका के हब्शी लोगों को, गाने बजाने में ताल की ही प्रमुखता उनके यहाँ है । रेड इंडियनों का टमटम और हब्शी लोगों का ढोल, ताल ही देता है । हब्शी लोग तो ढोल बजाने में इतने उस्ताद हैं कि उन्होंने ढोल की भाषा का ईजाद कर लिया है । एक जगह कोई ढोल बजा रहा है– दूसरा मीलों की दूरी पर बैठा उस ढोल को सुनकर समझ लेता है कि वह क्या कह रहा है ।

गाने–बजाने का शौक जैसा कि कहा गया है, पिछड़े–से–पिछड़े देश के लोगों में भी है। मध्य अफ्रीका के लोग खूब गाते–बजाते हैं और उनका गवैया दल जहाँ जाता है, उसे पूरा सम्मान मिलता है किंतु वहाँ के

गवैयों पर एक आफत भी है । किंवदंती है कि जो सबसे अच्छा गाता था, राजा उसकी आँखें निकलवा लेता था, जिससे गवैया राज्य छोड़कर दूर देश न चला जाए ।

हर पूर्वी देश का एक-न-एक बाजा मशहूर है । जिस प्रकार भारत में 'वीणा' प्रसिद्‌ध है । हमारी सरस्वती देवी भी वीणा ही बजाती हैं । इसे भारत का राष्ट्रीय बाजा समझा जा सकता है । चीन के ऐसे बाजे का नाम 'राजा' है । एक काठ का तख्ता लटका रहता है, जिसपर सोलह पत्थर के टुकड़े दो पंक्तियों में सजाए रहते हैं, जिनपर एक काठ की मुँगरी से हलके-हलके मारकर नाना तरह के स्वर निकालते हैं । बर्मा में एक तरह की 'ढोल तरंग' बनाई जाती है । भिन्न-भिन्न आकार के इक्कीस ढोलों को अर्ध वृत्ताकार में रखते हैं और बजाने वाला उसके बीच में बैठकर या खड़े होकर उन्हें बजाता है। जापानी लोग बाँस के पोपले टुकड़ों को क्रम से रखकर, उन्हें पीटकर एक प्रकार की दिलचस्प स्वर तरंग निकालते हैं- जिसे 'ऐंगलौंग' कहते हैं। जापान में, भारत के ही समान, तार के संयोग से बने बाजों की भी बड़ी कदर है । सितार, सारंगी, वीणा ऐसे बहुत से तारवाले बाजे वहाँ हैं ।

उत्तरी अमेरिका के रेडस्किन जाति के मस्त गवैये होते हैं । उनके पास केवल तीन ही बाजे होते हैं-ढोल, पिपुही और झुनझुना-किंतु इन्हीं के सहारे वे बड़े मजे ले गा लेते हैं । अमेरिका के कुछ आदिनिवासी एक विचित्र ढंग के ढोल का प्रयोग करते हैं । एक छोटे से ढोल में पानी रख देते हैं । अपने स्वर के अनुसार बनाने के लिए गवैये बार-बार उसके पानी को कम या बेशी करते हैं ।

कुछ बाजे तो खूब ही विचित्र होते हैं । न्यासालैंड टापू के गवैये एक प्रकार का बाजा बजाते हैं, जिसे 'बाजों की खिचड़ी' कहा जा सकता है । पैर में अखरोट के छिलके बँधे रहते हैं, जिनके भीतर पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े होते हैं। हाथ में एक तारवाला बाजा रहता है, जिसके सिरे से घंटी लटकती रहती है । जब वे गाते हैं, एक ही साथ झुनझुने, घंटी और तार की आवाज निकलती है। फिजी के आदि अधिवासी एक लंबी-सी बंशी अपनी नाक से बजाते हैं। मलाया में भी ऐसी विचित्र बंशी देखी जाती है । मैक्सिको में जो काठ के 'मरिंबा' का प्रयोग किया जाता है, उसपर एक साथ ही चार-चार आदमी तक बजा लेते हैं। हमारे देश का सिंगा भी दूसरे देशवासियों के लिए कुछ कम आश्चर्यजनक बाजा नहीं है ।

—०—

श्रवणीय

दूरदर्शन पर किसी संगीत कार्यक्रम में प्रस्तुत किए जाने वाले गीत सुनो ।

संभाषणीय

कक्षा में किसी त्योहार को मनाने की पद्‌धति, अलग-अलग परिवारों के रीति-रिवाजों के बारे में गुट चर्चा करो ।

लेखनीय

'मेरा प्रिय प्रार्थना गीत' विषय पर लगभग दस वाक्यों में शुद्‌ध एवं मानक लेखन करो ।

पठनीय

किसी कहानी या लघुकथा का मौन एवं मुखर वाचन करो ।

शब्द वाटिका

बेतहाशा = असीमित
पिपुही = छोटी बाँसुरी, पिपहरी
नरकट = पतली गाँठदार बेंत
ईजाद = खोज
मशहूर = प्रसिद्‌ध
मुँगरी = मुठियादार लाठी
बेशी = ज्यादा
अधिवासी = आकर बसने वाला

※ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) संजाल पूर्ण करो :

पाठ में आए हुए बाजों के नाम

(२) पाठ के आधार पर जानकारी लिखो :

१. मरिंबा
२. राजा

(३) लिखो :

बाजा, गाने को बना देता है

जापान के तारवाले बाजे

भाषा बिंदु

(अ) शब्द बनाओ :

------ ← उपसर्ग युक्त शब्द ← समान → प्रत्यय युक्त शब्द → ------

------ ← उपसर्ग युक्त शब्द ← सुर → प्रत्यय युक्त शब्द → ------

(आ) पाठों में आए सर्वनाम ढूँढ़कर उनका वाक्य में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन

अनुवाद करो :
अपनी मातृभाषा के समाचार पत्र की दस पंक्तियों का हिंदी में अनुवाद करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

भारतीय शास्त्रीय संगीत परंपरा की संक्षिप्त जानकारी लिखो ।

I458I5